प्रकाशक—
श्री मां मन्दिर
मण्डी धनौरा, मुरादाबाद
यू० पी०

श्री मां मन्दिर की तीसरी ईंट

चौथी बार] [सन् १९५० ई०

मूल्य ~~छः~~ आना

-।।)

मुद्रक—
सुदर्शन प्रेस,
मसजिद खजूर, देहली।

एक बात

की उन्नति है। हमेशा याद रखिये ! किसी भी मनुष्य को जब तक संसार में रहना है तब तक उसे किसी न किसी समाज में रह कर समाज के नियमों का पालन करना ही पड़ेगा। समाज को ठुकराना सरल बात है किन्तु समाज के ठुकराये हुए को संसार में कहीं भी यथोचित स्थान नहीं मिलता ! आप भारतीय ललनायें हैं। और—

"भारतीय नारी के आदर्श जीवन की समता करने वाला विश्व के इतिहास में कोई भी उदाहरण नहीं है।"

विश्व भारती के इस अनुपम गौरव की रक्षा के हित तलवार की धार और आग की लपटों से खिलवाड़ करने वाली वीराङ्गनाओं की सन्तानों ! आज तुम्हारे होट और नाखूनों पर यह बनावटी सुर्खी ! ! !

श्री मां मन्दिर
मन्डी धनौरा मुरादाबाद
यू० पी०

तुम्हारा—
"विकल"

"भारतवर्ष का धर्म भारतवर्ष के पुत्रों से नहीं, पुत्रियों की कृपा से स्थिर है। यदि भारतीय देवियां अपना धर्म छोड़ देतीं, तो अबतक भारत कभी का नष्ट हो गया होता।"

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

अब और तब

(१)

कहां गई वह दिव्य देवियाँ,
कहां गई वह सुर-बाला।
भारत का इतिहास जिन्होंने,
गर्म रक्त से रंग डाला॥
देश धर्म हित खेल खेलतीं,
छुरी, कटारी, लपटों से।
उन्हीं वीर बालाओं की,
सन्तान आज है न्यूबाला॥

(२)

धर्म रसातल गया कर्म पर,
आंख मींच पानी डाला।
कहे कौन! जब रहा न कोई,
सत्य बात सुनने वाला।
ठकुर सुहाती—कभी न कहता,
कहता हूं! डंके की चोट।
भारत का 'विध्वंस' करेंगी,
यही! तुम्हारो न्यूबाला॥

(३)

शीश हथेली पर धर करके,
विपदा में जीवन डाला।
दशरथ के संग! गई केकयी,
किया खूब करतब आला॥
अवसर देख 'धुरी' में दे दी,
वह भी तो उँगली ही थी।
अब उँगली को दस्तानों में,
फिरें छिपाती न्यूबाला॥

(४)

रण चंडी रण में जाती थीं,
पिये वीरता का प्याला ।
बाग अश्व की, मुँह में दाबी,
नयनों से बरसे ज्वाला ॥
दोनों कर की कभी कलाई,
रण में दिखलाती जौहर ।
उसी हाथ में खड़ी खड़ी,
अब 'घड़ी' बांधती न्यूबाला ॥

(५)

कर में जिनके शोभित रहते,
धनुष बाण बर्छी भाला ।
बड़ी बड़ी विपदायें सह कर,
अपना जीवन व्रत पाला ॥
कोमल तलवे रणस्थली में,
गर्म-रक्त से रंग जाते ।
उन पैरों पर अब घर बैठी,
मलैं 'महावर' न्यूबाला ॥

(२)

धर्म रसातल गया कर्म पर,
आंख मींच पानी डाला।
कहे कौन ! जब रहा न कोई,
सत्य बात सुनने वाला।
ठकुर सुहाती–कभी न कहता,
कहता हूं ! डंके की चोट।
भारत का 'विध्वंस' करेंगी,
यही ! तुम्हारी न्यूबाला॥

(३)

शीश हथेली पर धर करके,
विपदा में जीवन डाला।
दशरथ के संग ! गई केकयी,
किया खूब करतब आला॥
अवसर देख 'धुरी' में दे दी,
वह भी तो उँगली ही थी।
अब उँगली को दस्तानों में,
फिरें छिपाती न्यूबाला॥

(४)

रण चंडी रण में जाती थीं,
पिये वीरता का. प्याला ।
बाग अश्व की, मुँह में दाबी,
नयनों से बरसे ज्वाला ॥
दोनों कर की कभी कलाई,
रण में दिखलाती जौहर ।
उसी हाथ में खड़ी खड़ी,
अब 'घड़ी' बांधती न्यूबाला ॥

(५)

कर में जिनके शोभित रहते,
धनुष बाण बर्छी भाला ।
बड़ी बड़ी विपदायें सह कर,
अपना जीवन व्रत पाला ॥
कोमल तलवे रणस्थली में,
गर्म-रक्त से रंग जाते ।
उन पैरों पर अब घर बैठी,
मलैं 'महावर' न्यूबाला ॥

(६)

विपदाओं से वही निकलता,
होता है जो दिल वाला।
आज न जाने क्या सूझी है,
सब पुरुषार्थ गँवा डाला॥
यही वीर-बाला करती थीं,
कभी सामना शेरों का।
अब मच्छर के डर से सोवें,
तान 'मसेहरी' न्यूबाला॥

(७)

राजकुमारी बनी भिखारिन,
विपदा में जीवन डाला।
पातिव्रत का पतिव्रता ने,
पिया खूब भर भर प्याला॥
सत्यवती है कहां! करे जो,
मुर्दा पति को भी जिन्दा॥
अब निर्धन औ रोगी पति को,
'ज़हर' पिलाती न्यूबाला॥

(८)

भरत सरीखा सुत हो कैसे,
शेरों से लड़ने वाला ।
मात पिता ने सर्वनाश जब,
विषय भोग में कर डाला ॥
मिले ख़ाक में हाय ! जवानी,
अरी ! जवानी की भूखी ।
सन्तानों को क्यों ! डिब्बे का,
दूध पिलाती ! न्यूबाला ॥

(९)

स्वाभिमान गौरव मर्यादा,
सब पर ही पानी डाला ।
जिसको चाहा संग उसी के,
पिया खूब भर भर प्याला ॥
कहां गई चित्तौड़-भवानी,
अरी पद्मनी देख दशा ।
तेरा 'जौहर' भूल बनी है,
'मिस-गौहर' सी न्यूबाला ॥

यदि मुझे किसी छोटी लड़की को पढ़ाना पड़े और वह मेरी जिम्मेदारी पर छोड़ दी जाये, तो मैं उसे बजाय पण्डिता बनाने के, उन बातों की शिक्षा दूंगी जिनसे उसका जीवन सुख शांति से व्यतीत हो। मैं उसे एक तेज, जिन्दा-दिल और समझदार लड़की बनाना पसन्द करूंगी।

—रानी ललित कुमारी देवी (मण्डी)

वर्तमान शिक्षा

(१०)

बचपन ही से मात पिता ने,
फैशन खूब सिखा डाला।
दो पूरी आजादी उसको,
रहा कौन कहने वाला॥
हाय! ज़रा सी इस गलती का,
निकला क्या भीषण परिणाम।
बड़ी हुई तब यही देवियां,
बन जाती हैं! न्यूबाला॥

(११)

कन्याओं के विद्यालय का,
हाल खूब देखा भाला ।
बुरा न मानो सच कहता हूं,
मरै झूंठ कहने वाला ॥
गुरुकुल ऋपिकुल विधवा सधवा,
महिला संघ अनाथालय ।
सदाचार की ! छिपीं आड़ में,
'दुरा-चारिणी' न्यूबाला ॥

(१२)

अपने हाथों ही से अपना,
सर्वनाश जब ! कर डाला ।
सामवेद का गान कहां अब,
करै गान. करने वाला ॥
वीणा पुस्तक रंजित हस्ते,
सरस्वती की शुभ प्रतिमा ।
लिये वायलन और वैन्जो,
क्यों फिरती हैं न्यूबाला ॥

(१३)

ब्रह्मचारिणी ने गुरुकुल में,
जीवन सुखद बना डाला।
सबका आदर किया प्रेम से,
निज कर्तव्य सदा पाला ॥
अमित श्रद्धा से जो गुरुजन के,
रही निरखती नित्य चरण ।
मार 'कहकहा' हँसते हँसते,
करै 'नमस्ते' न्यूबाला ॥

(१४)

सेवा ! सेवा ! चिल्ला करके,
कितनों ही का घर घाला।
पटक पटक कर हाथ मेज पर,
दिया लेक्चर क्या आला ॥
सौ सौ चूहे चाट बिलैया,
चली हज्ज अब करने को।
जहाँ पढ़ाने वाली ऐसी,
वहां न हों क्यों ? न्यूबाला ॥

(१५)

पढ़ी खूब ! वह पढ़े लिखे पर,
अन्तिम पानी ही डाला ।
ऐसी अन्धी हुई ! न अपना
धर्म कर्म देखा भाला ॥
अरे यही क्या ! उन्नति का पथ,
मिला 'कनैक्शन' ट्यूशन में ।
छोड़ सभी परिवार गुरू के,
पीछे फिरती ! न्यूवाला ॥

(१६)

कुर्सी मेज पलंग स्प्रिंग का,
चेस्टर बिस्तर भी आला ।
कंघी शीशा क्रीम पाउडर,
चश्मे पर दिल मतवाला ॥
पर्ण कुटी में तज आडम्बर,
सदा चारिणी पढ़ती थीं ।
अब गुरुकुल में कर्म कलंकित,
नित करती है न्यूवाला ॥

(१७)

धर्मग्रन्थ हा ! कभी न पढ़ती,
पढ़ती अफ़साने आला ।
शुद्ध विचार हुआ कब उसका,
रहा हमेशा दिल काला ॥
जो कुछ पढ़ती ! वही देखती,
और करै क्या ? दीवानी
मीरा झूमी कृष्ण प्रेम में;
न्यूथियेटर में न्यूबाला ॥

(१८)

बिना मौत के बता मौत ने,
किसका गला दबा डाला ।
अमर कौन ? बैठा है जग में,
'चमची' से खाने वाला ॥
बिना परों के क्यों उड़ती है,
पढ़ने से बिन पढ़ी भली ।
उँगली के नाखूनों में अब,
'ज़हर' बताती न्यूबाला ॥

(१६)

ऐसा उसको ! लगा शौक,
जो कभी नहीं छुटने वाला।
सहपाठी मिल गया हाथ,
झट उसकी पाकिट में डाला॥
छीन लिया जो कुछ भी निकला,
यही मिला 'सह-शिक्षा' में।
बैठ चांदनी चौक मित्र संग,
चाट उड़ाती न्यूबाला॥

(२०)

बड़ी लाड़ली मात पिता की,
जो चाहा ! सो कर डाला।
बोलो तुम ही रहा कौन फिर,
उसके मुँह लगने वाला॥
इसको कहते हैं ! आजादी,
ब्याह न अपना करती है।
कौन ? बंधे-बन्धन में,
फिरती गर्भ गिराती न्यूबाला॥

(२१)

सर से पैरों तक ! न जाने,
क्यों ? शृङ्गार बना डाला ।
पढ़ने चली, चली या करने,
हृदय किसी का मतवाला ॥
कौलिज में पहुँची तो उसके,
लगे 'उचकने' सहपाठी ।
ऊँची ऐड़ी पर चौतरफा,
देख उछलती न्यूबाला ॥

(२२)

पाप नहीं ! लड़की का पढ़ना,
कौन बुरा कहने वाला ।
सफल गृहस्थी यही बनेंगी,
जीवन की संगिन आला ॥
पैरों की जूती मत समझो,
इन्हें बराबर का हक़ दो ।
लेकिन हां ! आजाद न इतनी,
बन जायें जो न्यूबाला ॥

लड़कियां सुन्दर चीजों से प्रेम करें, इसमें कोई खतरा नहीं है ! लेकिन वह सुन्दरता वास्तविक हो ! यदि यह प्रेम केवल अपने स्वार्थपूर्ण आनन्द के लिए ही काम में न लाया जाय और अपने देश के सौन्दर्य (संस्कृति) को बढ़ाने की भावना भी इसके साथ रहे तो बजाय कमजोरी के यह तो एक शक्ति है।

—श्रीमती मार्गरेट ई० कान्जिन्स

उन्नति के पथ पर

(२३)

आज उन्नति के पीछे है,
यह सारा ही जग मतवाला।
फैशन की 'भुतनी' को देखो,
है कमाल क्या कर डाला॥
आंख फोड़ दी एक प्रभो ने,
उसने चश्मा लिया लगा।
एक आंख की तीन बना लीं,
देखी 'कानी' न्यूबाला॥

(२४)

हाय ! बुरा हो जाय गरीबी,
मिस को चक्कर में डाला ।
पड़ी हुई है ! खाली बोतल,
टूट गया प्याली प्याला ॥
पिस्ता किशमिश मक्खन रोटी,
बिस्कुट अंडे हवा हुये ।
पीकर अब 'नमकीन' चाय,
दिन रात गुजारे न्यूबाला ॥

(२५)

कौव्वे ! कोयल दूर भागते,
रूप देख उसका काला ।
निरख थूथड़ा ! पड़ा तवे के,
मुंह पर भी पल में पाला ॥
फैशन की मतवाली आली,
काली के जौहर देखो ।
लगा पाउडर ! कर लेती है,
नित्य 'दिवाली' न्यूबाला ॥

(२६)

उठ रे उठ ! हट एक तरफ को,
पड़ा कौन ! सोने वाला ।
बैठ सीट पर ! खूब जमाती,
शान 'सिम्पसन' की खाला ।
आया करने चैक टिकट जो,
उसका दिल कर डाला चैक।
करै 'विदाउट' सफर रेल में,
हमने देखी न्यूबाला ॥

(२७)

काढ़ी तिरछी मांग सजाया,
चोटी में फीता आला ।
रंग विरंगे लगा किलफ़,
गणिका सा ठाठ बना डाला ॥
बोल करै बला उसका कोई,
उतर गई जिसकी लोई ।
बाजारों में नंगे सिर अब,
घूम रही है न्यूबाला ॥

(२८)

कभी पहन सलवार गले में,
ढाके का कुर्ता आला ।
कभी छिपी सारी सारी में,
कभी 'चुश्त' साया आला ॥
काली पीली लाल गुलाबी,
हरी सुनहरी 'गिरगिट सी'
धुन सवार फैशन की कैसे,
रंग बदलती न्यूबाला ॥

(२८)

भाषा-भूषा-भेष देश के,
साथ सदा रहने वाला ।
जिसे निभाते आये पुरखा,
उसको हाय ! मिटा डाला ॥
किसी मेम को कभी घाघरा,
पहने भी देखा तूने ।
घूम रही ! पहिने फिराक,
किसके 'फिराक़' में न्यूबाला ॥

स्वच्छता और सफाई का ध्यान तो हर समय अवश्य रखना ही चाहिये। वह चाहे वस्त्रों की हो! अथवा शरीर की। परन्तु जिसे प्रकृति ने स्वयं ही सुन्दर बनाया है, उसे बाहरी आडम्बर या आभूषणों की आवश्यकता ही नहीं होती। अधिक सुन्दर बनने की चेष्टा करने से वास्तविक सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। क्योंकि सुन्दरता तो सुन्दरता ही है वह साधारण भेष में भी नहीं घटती।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(३०)

पहन सिलक की साड़ी चलदी,
'जारजेट' जम्फर आला।
फिरै 'सिकुड़ती' महा पूस में
फैशन पर! दिल मतवाला॥
सर्दी! गर्मी! नहीं सताती,
रहता था तन का पर्दा।
उस लंहगे को! अब हाथी की,
'झूल' बताती न्यूबाला॥

(३१)

प्रभु ही जाने ! इस उन्नति के,
युग में क्या होने वाला ।
भारतीय ! नारी ने भी अब,
आगे 'कदम' बढ़ा डाला ॥
अरे ! गुलामी ही देखी थी,
अब देखो ! तुम आजादी ।
करीं ! एक की 'दो' चोटी,
अब 'चार' करेगी न्यूवाला ॥

(३२)

रही न आपे में ! हो ऐसी,
आजादी का ! मुँह काला ।
आंख तले कब लाती ! बकता,
रहा करे बकने वाला ॥
दिन भर सोती ! दिन छिपते ही,
कर 'शृङ्गार' चली घर से ।
लिए 'टार्च' करती फिरती है,
'कुइकमार्च' सी न्यूवाला ॥

हमें अपने खान पान का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है । क्योंकि भोजन का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है । किसी ने ठीक ही कहा है कि—जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वानी । हम सात्विक भोजन के द्वारा ही ! अनेकों दुष्कर्मों से वच कर अपने सात्विक विचार वना सकते हैं ।

—महात्मा नारायण स्वामी

(२३)

खान पान का भेद स्वाद के,
पीछे हाय ! मिटा डाला ।
कभी न सोचा ! जैसा भोजन,
वैसा मन होने वाला ॥
मात पिता के साथ वैठ कर,
'सोम सुधा' करती थीं पान ।
पियें ! 'शोरवा' मुर्गी का,
अव 'न्यूहोटल' में न्यूवाला ॥

(३४)

बड़े न ढंग से रहें ! कौन फिर,
छोटों से ! कहने वाला ॥
यह तो बच्चों का स्वभाव है,
जो देखा ! सो कर डाला ॥
बांध रहे 'यज्ञोपवीत' में,
पिता पिता मह ! जब चाबी ।
क्यों ? अपनी चोटी में चाकू,
बोल ! न बांधे न्यूबाला ॥

(३५)

जाती थी कौलिज को लेकिन,
मिला राह में ! दिल वाला ।
भूल गई सब कुछ फिर क्या था,
झट प्रोग्राम ! बना डाला ॥
सब से पीछे ! बैठे दोनों,
वहां ! जहां थी दिन में रात ।
युग युग जियें 'सिनेमा' वाले,
युग युग जीवें ! न्यूबाला ॥

सच्चरित्रता ही ! उन्नति का मूल है, सभी जानते हैं परन्तु उपदेश ! हमेशा दूसरों ही को देने के लिए हुआ करता है। धन्य हैं वह ! जो सर्व प्रथम अपने को तथा अपने परिवार को, सुधार कर किसी से कुछ भी कहने से पहिले ही उस पर पूर्णतया आचरण करते हैं। ऐसे महापुरुष के लिए तो मौन रहकर भी मनुष्य ही क्या पत्थर को भी प्रभावित कर देना साधारण सी बात है।

—विकल

(३६)

छोटों के झट 'कान' पकड़ लें,
जो चाहा ! सो कह डाला।
दिल पै रख कर हाथ ! जरा तो,
सोचे कोई ! दिल वाला ॥
पर उपदेश ! कुशल बहुतेरे,
जो करलें सो ! थोड़ा है।
बड़े बड़े 'लीडर' देखे हैं,
देखीं ! उनकी न्यूवाला ॥

(३७)

बन्दर ने घुड़का ! तो उसने,
सहसा शोर मचा डाला ।
औ कुत्ते की ! एक डपट ने,
ठोक दिया मुँह पर ताला ॥
रही सिसकती ! सारी निश जो,
चूहों की ! चूँ चूँ सुन कर ।
भारत का उत्थान ! करैं क्या ?
यही ! तुम्हारी न्यूबाला ॥

(३८)

अर्जुन का वह ! कहां निशाना,
'मीन' गिरा देने वाला ।
धनुष कहां शिव का टूटा,
जो सीता डाले जयमाला ॥
मात पिता को रही न चिन्ता,
देख ! सुपुत्री के लक्षण ।
जब चाहे ! तब कर लेती है,
आप 'स्वयंबर' न्यूबाला ॥

महाराष्ट्र की महिलाओं की ओर देखिये ! वह कितनी साहस मयी हैं वह स्वतन्त्र हैं और साथ ही कितनी संयमी तथा परम्परावादिनी हैं। वह अपने सिरके बाल नहीं कटातीं, अपने चेहरों को नहीं रंगती और पाश्चात् आवरणों की नकल न करके अपनी दादियों जैसी ही ! साड़ियां पहनती हैं ! इसलिये महिलाओं को शिवा जी के देश की महिलाओं के समान ही बनना चाहिये।

—चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य

देश-सेविका

(३६)

एक हाथ में झण्डा लेकर,
दूजे में झोला डाला।
देश सेविका ! देश सेवकों,
का करती दिल मतवाला ॥
यह 'प्रभात-फेरी' में देखा,
जब चाहा ! जिसने चाहा।
बहिन बहिन ! करके भाई ने,
हृदय लगाई ! न्यूबाला ॥

(४०)

आग फूंस गर, पास पास हों,
आप लगै भीषण ज्वाला ।
दुनियां के इस अटल नियम को,
झूठ कौन ? करने वाला ॥
सदाचार क्या ! करै विचारा,
देश जाति हित के आगे ।
स्वयंसेविकों की 'दल दल' से,
कभी न निकली ! न्यूबाला ॥

(४१)

देशभक्त है वही ! देश हित,
सर्वस अर्पण कर डाला ।
शुद्ध हृदय ! निस्वार्थ भाव से,
पिया 'प्रेम रस' का प्याला ॥
धन्य धन्य ! 'कमला नेहरू' को,
'प्यासी' खड़ी ! दुपहरी में,
हा ! लैमन पी ! तान छत्तरी,
करै 'पिकेटिंग' न्यूवाला ॥

पुण्यात्मा (पतिव्रता) पत्नी का मिलना परमात्मा की सब कृपाओं से बड़ी कृपा है। वह पति के लिये देवी है, सकल गुणों की मूर्ति है, हीरा है, मोती है, दौलत है। उसके स्वर में उसे मधुरता और उसकी मुस्कराहट में उसे असीम आनन्द दिखाई देता है।

—जरमीटेलर

दाम्पत्य जीवन

(४२)

सास ससुर के मुँह पर ठोका,
उसने गुजराती ताला।
तेवर बदल ! विचारा देवर,
मारा बेघर कर डाला ॥
नाक नन्द की पकड़ हिलादी,
मारी लात जिठानी के।
हाथ जोड़ ! पतिदेव खड़े जब,
हुक्म चलाती न्यूवाला ॥

(४३)

हो जब तक ! फरमाइश पूरी,
है तब तक ही घर वाला ।
मन, बच, काया पति पद प्रेमा,
का मैं करदूं ! मुँह काला ॥
फेर न कहना ! मुझे न था,
मालूम कहां वह चली गई ।
अब 'तलाक बिल' सबसे पहिले,
पास करेगी ! न्यूबाला ॥

(४४)

पति चरणों में सर्वस अर्पण,
सेवा में मन मतवाला ।
मिष्ट-भाषिता से घर बाहर,
सब को मोहित कर डाला ॥
सादर सास-ससुर पद पूजा,
रहा नियम ! यह सीता का ।
उसी सास के सर की अब,
'फुटबाल' बनाती न्यूबाला ॥

(४५)

छुटी नौकरी! बोले बाबू,
खर्च न अब, चलने वाला।
करो काम खुद! छोड़ो नौकर.
किसमत ने चक्कर डाला॥
नहीं हिलाऊँ तिनका! जाऊँ–
जहां वहीं तलवे चाटें।
मुझे बहुत से! हैं तुझसे,
पर तुझे न मिलनी न्यूवाला॥

(४६)

कुर्सी झाड़ी मेज सफा की,
जचा दिया प्याली प्याला।
चौका बासन लीपा पोती,
करै क्यों? करने वाला॥
कभी नाश्ता और कभी है,
रोटी पानी चाय गरम।
प्राणनाथ जी! चूल्हा फूंकैं,
'नाविल' पढ़ती न्यूवाला॥

(४७)

क्रिस फुर्ती से चढ़ी कूद कर,
पैडिल खूब घुमा डाला ॥
दोनों पैर रखे हैंडिल पर,
करती थी करतब आला ॥
सब फैशन मिल गया धूल में,
उलझ गई चोटी में चैन।
हुई बावली शक्ल गिरी जब,
'बाइसकिल' से न्यूबाला ॥

(४८)

उबले अंडे खाकर उसका,
हो जाता दिल मतवाला।
लैमन में ली सुरा मिला,
तब पिया खूब भर भर प्याला ॥
ज़ाफ़रान बिन पान न खाती,
बड़ी परेशां रहती है।
है ऐसी शौक़ीन नित्य,
'कोकीन' उड़ाती न्यूबाला ॥

(४९)

जाड़ों में वह कब न्हाती है,
उसे मार जाता पाला ।
प्रातः क्रीम लगाई ! मानो,
कुम्भ 'प्रयाग' मना डाला ॥
संध्या समय पलंग पर बैठी,
ओढ़ लिहाफ ! खोल हीटर ।
ओवर कोट पहन कर क्या ?
'विस्फोट' करेगी न्यूबाला ॥

(५०)

सनलाइट बिन हाथ न धोती,
नाखूनों को रंग डाला ।
भूल गई ! दातौन दिवानी,
बुर्श हाथ में क्या आला ॥
कांटे से खाना खाती है,
उँगली को रखती है दूर ।
और 'जीभ' को साफ छुरी से,
अब करती है ! न्यूबाला ॥

(५१)

साबुन मल कर खूब न्हिलाया,
बड़े प्यार से है पाला।
उठा लिया गोदी में टोमी,
किस-लेता 'किसमत' वाला॥
प्रभु ही जाने ! यह कुत्ता क्या,
'पूर्व जन्म' का साथी है।
किसी बात में भी इससे,
परहेज न करती न्यूबाला॥

(५२)

प्राणनाथ ने ! मूंछ कटा कर,
मांग काढ़ ली क्या आला।
बिछुवे चूड़ी फेंक ! प्रिया ने,
चिह्न सुहाग मिटा डाला॥
भारतीयता को ले डूबे,
यही आज लेडा-लेडी।
न्यूबाला से पति बढ़कर है,
पति से बढ़ कर न्यूबाला॥

(५३)

पीछा छुटा ससुर जी सटके,
सास जपै बैठी माला ।
गाली देकर ! प्राणनाथ को,
अद्भुत नाच नचा डाला ॥
कान दबाये ! पड़े पड़ौसी,
घर वालों की कौन कहे ।
बदल पैंतरा ! जब ज़बान की,
'छुरी' चलाती न्यूबाला ॥

(५४)

पति ही से है ! धर्म कर्म,
औ पति ही गति देने वाला ।
धन्य धन्य ! उस पतिव्रता को,
जिसने हो पतिव्रत पाला ॥
भारतीय नारी का जग में,
है सब से ऊँचा आदर्श ।
बनी बनाई 'सुरबाला' हो,
क्यों ? बनती हो न्यूबाला ॥

(५५)

धन्य राम सा वीर धीर,
मर्यादा पर मिटने वाला।
धन्य भरत शुभ भ्रात प्रेम की,
जपता था निशि दिन माला॥
धन्य धन्य! माता कौशल्या,
धन्य धन्य! सीता देवी।
सती साध्वी! जहां रहीं थीं,
वहां आज यह न्यूवाला॥

(५६)

दया क्षमा संतोष प्रेम हो,
सदाचार भूषण आला।
देश धर्म औ परहित के हित,
जाग उठै उर में ज्वाला॥
स्वाभिमान! गौरव! मर्यादा,
निज कर्तव्य नहीं छोड़ूँ।
हे भगवान "विकल" भारत में,
रहे न कोई न्यूवाला॥